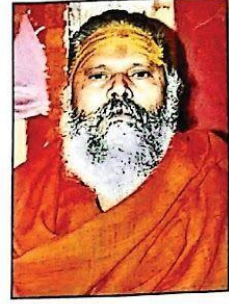


॥ श्री हनुमते नमः ॥



अध्यक्ष
अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद
श्री 108 महन्त नरेन्द्र गिरि

श्री मठ बाघम्बरी गढ़दी
(श्री बड़े हनुमान जी त्रिवेणी बाँध, प्रयाग)
भरद्वाजपुरम्, इलाहाबाद - 211006
दूरभाष : 0532-2506930, 2507176
मोबाइल : 9415340862



क्रमांक

दिनांक

Speech of Akhil Bharat Akhada Parishad Adhyaksha - Sri Sri 108 Swami Narendragiri ji Maharaj

अखिल भारतीय आखाड़ा परिषद अध्यक्ष - श्री श्री १०८ स्वामी नरेन्द्रगिरीजी महाराज

आप लोग जोर से बोलियेगा त्रयम्बकेश्वर भगवान की - जय।

श्री नित्यानन्द स्वामीजी महाराज की भी जय बोलिए। आज से एक सप्ताह पहले मेरे पास इंडिया न्यूज़, आई.बी.एन-7 तमाम न्यूज़ चैनल आये थे तो आपके विषय में पूछे - तो मैंने कहा की वो सनातन धर्म की रीढ़ की हड्डी है। स्वामीजी अभी अभी हमसे बात कर रहे थे, आपने कहा की मैं जो भी कार्य करता हूँ वो हमारी वैदिक सनातन परंपरा के अनुसार करता हूँ, उसके विपरीत मैं नहीं करता हूँ। स्वामीजी ने कहा की मैं १३ अखाड़ों का अध्यक्ष हूँ और १० लाख साधू जो मैं कहता हूँ वो करते हैं। मेरा मानना है की स्वामीजी कहते तो सही हैं लेकिन मैं उनका सेवक हूँ। आपके आश्रम में आकर के मैंने जैसे ही प्रवेश किया वैसे देखा की बहुत बढ़िया शिवलिंग, अदभुत शिवलिंग था। ऊपर आया तो तमाम मूर्तियाँ गणेश जी के विग्रह शंकर पार्वती का विग्रह, सभी जितने विग्रह थे आपके सेवकों ने बताया की यह सब स्वामीजी के आश्रम में बनता है। देखिये किसी भी संन्यासी को एक बार परीक्षा देनी पड़ती है। और मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है की स्वामीजी ने उस परीक्षा में सफल होकरके पूरे भारत वर्ष में ही नहीं - अपितु पूरे विश्व में भारतीय सनातन धर्म का जो प्रचार प्रसार कर रहे हैं उसके लिए तो भारत सरकार को स्वामीजी का सम्मान करना चाहिए, स्वामीजी का आदर करना चाहिए।

अभी हम स्वामीजी के कमरे में थे, उन्होंने वहाँ दो बच्चे लाए उनकी आँख में पट्टी बाँध करके हमारा विसिटिंग कार्ड, हमारे मोबाइल पे जो चीज़ लिखी थी उन्होंने बिलकुल सत्य वही चीज़ बताई। हमें आश्चर्य हुआ। लेकिन बाद में स्वामीजी ने कहा की महाराजश्री जब महाभारत की लड़ाई हुई तो संजयजी कहाँ बैठे थे और युद्ध कहाँ हो रहा था; उतने दूर से जब हम उस समय देख सकते थे तो वही जो हमारी वैदिक परंपरा है उसके अनुसार हम इनके ब्रह्माण्ड में प्रवेश करके, इनका जो तीसरा नेत्र है, भगवान शंकर के पास भी जो तीसरा नेत्र है, ऐसा नहीं है जैसे लोग समझते हैं की ये फ्रॉड (धोखा) है, ऐसा कुछ भी नहीं है। जब आदमी के अंदर तपबल की शक्ति होती है तो वह कुछ भी कर सकता है। तो स्वामीजी के अंदर इतना तप है की आपने तीसरी आँख का ज्ञान, मेरे खयाल से जो हमारी भारतीय पद्धति है, उसके अनुसार लोगों को सिखा रहे हैं। अभी हमने आपसे कहा की 11 विद्यार्थी हम भी भेजेंगे आपके यहाँ, आपने कहा की बिलकुल भेजिए मैं उनको सिखाऊंगा। तो ऐसे स्वामीजी का मैं स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

अखिल भारतीय आखाड़ा परिषद
महन्त नरेन्द्रगिरि

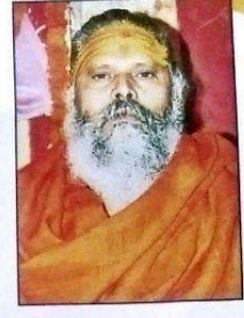
॥ श्री हनुमते नमः ॥



अध्यक्ष अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

श्री 108 महन्त नरेन्द्र गिरि

श्री मठ बाघम्बरी गढ़दी
(श्री बड़े हनुमान जी त्रिवेणी बाँध, प्रयाग)
भरद्वाजपुरम्, इलाहाबाद - 211006
दूरभाष : 0532-2506930, 2507176
मोबाइल : 9415340862



क्रमांक

दिनांक

आप मेरे आश्रम में आये थे स्वामीजी। विश्व हिन्दू परिषद् के उस समय के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अशोक सिंघल जी के साथ। मैंने दर्शन करा, दर्शन के बाद आप चले गए। जाने के ३-४ दिन के बाद माननीय अशोक सिंघल जी मेरे यहाँ आये। स्वामीजी के विषय में पूरी बात बताई। मैं कभी कभी टीवी के माध्यम से, मीडिया के माध्यम से सुनता था। लेकिन जब सिंघल साहब ने पूरी बात बताई तबसे मैंने स्वामीजी को पूरी तरह अपना लिया। जब सिंघल साहब ने बताया की स्वामीजी का चरित्र ये है और स्वामीजी हिन्दुओं के लिए, सनातन धर्म के लिए पूरे विश्व में प्रचार कर रहे हैं, तबसे मैंने स्वामीजी को सम्मानपूर्वक अपना एक आदर्श मानना शुरू कर दिया। ऐसे व्यक्ति को जिस तरह से दिखाया जाता था उस तरह गलत था। और आज भी मैं कहता हूँ की इनके आश्रम में आकर के अदभुत लगा मुझे, ऐसा लगता की कोई दिव्य शक्ति यहाँ जरूर है।

आप सभी लोग भाग्यशाली हैं। जो लोग स्वामीजी से जुड़े हैं, आप सब बहुत बड़े भाग्यशाली हैं। आज मैं भी स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि मैं स्वामीजी से जुड़ा हुआ हूँ। मैं एक बात और कहूँगा अंतिम बात, की जो भी स्वामीजी से जुड़ेगा वह भाग्यशाली अपने आप हो जाएगा। ऐसे महान तपस्वी संत के विषय में मेरा तो मानना है की तप के बल पर, ध्यान के बल पर मनुष्य भगवन के रूप में हो जाता है। आज आपके सामने आदरणीय नित्यानंद स्वामीजी का साधना, तप, बल देखकर मुझे ऐसा लगा की वास्तव में मैं किसी दिव्य पुरुष के यहाँ आश्रम में आया हूँ।

आप सभी को जो भी यहाँ उपस्थित हैं और जो साधना चैनल के माध्यम से स्वामीजी का यह कार्यक्रम देख रहे हैं आप सबको मेरी तरफ से, हनुमान जी की तरफ से बहुत सारा आशीर्वाद, बहुत सारी शुभकामनाएं।

एक बार मैं पुनः स्वामीजी को प्रणाम करता हूँ।

महन्त नरेन्द्र गिरि

अध्यक्ष

अखिल भारतीय अखाड़ा

महन्त



॥ श्री हनुमते नमः ॥
अध्यक्ष
अखिल भारतीय अखाडा परिषद
श्री 108 महन्त नरेन्द्र गिरि
श्री मठ बाघम्बरी गद्दी
(श्री बड़े हनुमान जी त्रिवेणी बाँध, प्रयाग)
भरद्वाजपुरम, इलाहाबाद - 211006
दूरभाष : 0532-2506930, 2507176
मीबांडल : 9415340862



Speech of Akhil Bharat Akhada Parishad Adhyaksha – Sri Sri 108 Swami Narendragiri ji Maharaj

अखिल भारतीय अखाडा परिषद – श्री श्री १०८ स्वामी नरेन्द्रगिरीजी महाराज

आप लोग जोर से बोलियेगा त्रयम्बकेश्वर भगवान की - जय।

श्री नित्यानंद स्वामीजी महाराज की भी जय बोलिए। आज से एक सप्ताह पहले मेरे पास इंडिया न्यूज़, आई.बी.एन-7 तमाम न्यूज़ चैनल आये थे तो आपके विषय में पूछे - तो मैंने कहा की वो सनातन धर्म की रीढ़ की हड्डी है। स्वामीजी अभी अभी हमसे बात कर रहे थे, आपने कहा की मैं जो भी कार्य करता हूँ वो हमारी वैदिक सनातन परंपरा के अनुसार करता हूँ, उसके विपरीत मैं नहीं करता हूँ। स्वामीजी ने कहा की मैं १३ अखाड़ों का अध्यक्ष हूँ और १० लाख साधू जो मैं कहता हूँ वो करते हैं। मेरा मानना है की स्वामीजी कहते तो सही हैं लेकिन मैं उनका सेवक हूँ। आपके आश्रम में आकर के मैंने जैसे ही प्रवेश किया वैसे देखा की बहुत बढ़िया शिवलिंग, अदभुत शिवलिंग था। ऊपर आया तो तमाम मूर्तियाँ गणेश जी के विग्रह शंकर पार्वती का विग्रह, सभी जितने विग्रह थे आपके सेवकों ने बताया की यह सब स्वामीजी के आश्रम में बनता है। देखिये किसी भी संन्यासी को एक बार परीक्षा देनी पड़ती है। और मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है की स्वामीजी ने उस परीक्षा में सफल होकरके पूरे भारत वर्ष में ही नहीं - अपितु पूरे विश्व में भारतीय सनातन धर्म का जो प्रचार प्रसार कर रहे हैं उसके लिए तो भारत सरकारको स्वामीजी का सम्मान करना चाहिए, स्वामीजी का आदर करना चाहिए।

अभी हम स्वामीजी के कमरे में थे, उन्होंने वहाँ दो बच्चे लाए उनकी आँख में पट्टी बाँध करके हमारा विसिटिंग कार्ड, हमारे मोबाइल पे जो चीज़ लिखी थी उन्होंने बिलकुल सत्य वही चीज़ बताई। हमें आश्चर्य हुआ। लेकिन बाद में स्वामीजी ने कहा की महाराजश्री जब महाभारत की लड़ाई हुई तो संजयजी कहाँ बैठे थे और युद्ध कहाँ हो रहा था; उतने दूर से जब हम उस समय देख सकते थे तो वही जो हमारी वैदिक परंपरा है उसके अनुसार हम इनके ब्रह्माण्ड में प्रवेश करके, इनका जो तीसरा नेत्र है, भगवान शंकर के पास भी जो तीसरा नेत्र है, ऐसा नहीं है जैसे लोग समझते हैं की ये फ्रॉड (धोखा) है, ऐसा कुछ भी नहीं है। जब आदमी के अंदर तपबल की शक्ति होती है तो वह कुछ भी कर सकता है। तो स्वामीजी के अंदर इतना तप है की आपने तीसरी आँख का ज्ञान, मेरे ख्याल से जो हमारी भारतीय पद्धति है, उसके अनुसार लोगों को सिखा रहे हैं। अभी हमने आपसे कहा की 11 विद्यार्थी हम भी भेजेंगे आपके यहाँ, आपने कहा की बिलकुल भेजिए मैं उनको सिखाऊंगा। तो ऐसे स्वामीजी का मैं स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

S/n

महन्त नरेन्द्र गिरि



॥ श्री हनुमते नमः ॥
अध्यक्ष
अखिल भारतीय अखाडा परिषद
श्री 108 महन्त नरेन्द्र गिरि
श्री मठ बाघम्बरी गद्दी
(श्री बड़े हनुमान जी त्रिवेणी बाँध, प्रयाग)
भरद्वाजपुरम, इलाहाबाद - 211006
दूरभाष : 0532-2506930, 2507176
मीबांडल : 9415340862



आप मेरे आश्रम में आये थे स्वामीजी। विश्व हिन्दू परिषद के उस समय के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अशोक सिंघल जी के साथ। मैंने दर्शन करा, दर्शन के बाद आप चले गए। जाने के ३-४ दिन के बाद माननीय अशोक सिंघल जी मेरे यहाँ आये। स्वामीजी के विषय में पूरी बात बताई। मैं कभी कभी टीवी के माध्यम से, मीडिया के माध्यम से सुनता था। लेकिन जब सिंघल साहब ने पूरी बात बताई तबसे मैंने स्वामीजी को पूरी तरह अपना लिया। जब सिंघल साहब ने बताया की स्वामीजी का चरित्र ये है और स्वामीजी हिन्दुओं के लिए, सनातन धर्म के लिए पूरे विश्व में प्रचार कर रहे हैं, तबसे मैंने स्वामीजी को सम्मानपूर्वक अपना एक आदर्श मानना शुरू कर दिया। ऐसे व्यक्ति को जिस तरह से दिखाया जाता था उस तरह गलज था। और आज भी मैं कहता हूँ की इनके आश्रम में आकर के अदभुत लगा मुझे, ऐसा लगता की कोई दिव्य शक्ति यहाँ जरूर है।

आप सभी लोग भाग्यशाली हैं। जो लोग स्वामीजी से जुड़े हैं, आप सब बहुत बड़े भाग्यशाली हैं। आज मैं भी स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि मैं स्वामीजी से जुड़ा हुआ हूँ। मैं एक बात और कहूँगा अंतिम बात, की जो भी स्वामीजी से जुड़ेगा वह भाग्यशाली अपने आप हो जाएगा। ऐसे महान तपस्वी संत के विषय में मेरा तो मानना है की तप के बल पर, ध्यान के बल पर मनुष्य भगवन के रूप में हो जाता है। आज आपके सामने आदरणीय नित्यानंद स्वामीजी का साधना, तप, बल देखकर मुझे ऐसा लगा की वास्तव में मैं किसी दिव्य पुरुष के यहाँ आश्रम में आया हूँ।

आप सभी को जो भी यहाँ उपस्थित हैं और जो साधना चैनल के माध्यम से स्वामीजी का यह कार्यक्रम देख रहे हैं आप सबको मेरी तरफ से, हनुमान जी की तरफ से बहुत सारा आशीर्वाद, बहुत सारी शुभकामनाएं।

एक बार मैं पुनः स्वामीजी को प्रणाम करता हूँ।

S/n
महन्त नरेन्द्र गिरि



॥ श्री हनुमते नमः ॥
Adhyaksha (President)
Akhil Bharatiya Akhada Parishad
Sri 108 Mahant Narendra Giri
Shri Mathatha Bhamambari Paddi
(Shri Big Hanuman Ji Triveni Dam, Prayag)
Bharadwajapuram, Allahabad -
211006
Tel: 0532-2506930, 2507176
Miandal: 9415340862



Speech of Akhil Bharat Akhada Parishad Adhyaksha – Sri Sri 108 Swami Narendragiri ji Maharaj

I request everyone to loudly hail Lord Trimbakeshwar – “Jai”.

Also hail - Shree Nityanand Swamiji Maharaj. A week before, India News, IBN7 and all news channels came to me, and asked about His Divine Holiness - I said that He is the backbone of Sanatan Dharma (Hinduism). Swamiji was just talking to us, He said that whatever I did, I did it according to our Vedic Sanatan (Hindu) tradition, and never contrary to it. Swamiji said that I am president of 13 Akhadas and 10 lakh (one million) Sadhus (monks), and what I say they do. I believe that Swamiji is correct but I myself am a servant of His. When I came to Your Ashram (monastery), as soon as I entered, I saw that there was a very beautiful Shivling, a wonderful Shivling. When I came up, all the deities of Lord Ganesha, deities of Lord Shankar and Mother Parvati, your assistants revealed, are all made in Swamiji's ashram. See, any monk has to undergo a test for once. And I have no hesitation in telling that Swamiji has succeeded in that examination not only in entire India - but also all over the world He is spreading the teachings of Indian Sanatan Dharma (Hinduism), for that, the Indian government should recognize Swamiji, they should honour Swamiji.

We were in the Swamiji's room now, they brought two children there. Their eyes were covered with a blindfold. My Visiting Card, whatever was written on my mobile, they read and told exactly the same thing. I was shocked. But later Swamiji said that when Mahabharata was fought, then where was Sanjay ji sitting and where was the war going on; when we had the power to see from so far at that time, then that is what is our Vedic tradition, as per which we enter into their space, the third eye which they have, the third eye which Lord Shankar has, it is not like people think that this is a fraud, there is nothing like that. When a person has the power of penance inside, then he can do anything. As per what I think there is so much power of penance inside Swamiji that His knowledge of the power of the third eye which is as per our Bharatiya (Indian) Tradition, he is teaching to people as per that only. Right now, I told His Divine Holiness that I will also send 11 students to Him, then His Divine Holiness said absolutely I should send them and He will teach them the science. I welcome such Swamiji, I deeply thank Him.

S/n
Mahant Narendra Giri
The President
Akhil Bharatiya Akhada Parishad



॥ श्री हनुमते नमः ॥
Adhyaksha (Head)
Akhil Bharatiya Akhada Parishad
Sri 108 Mahant Narendra Giri
Shri Mathatha Bhamambari Paddi
(Shri Big Hanuman Ji Triveni Dam, Prayag)
Bharadwajapuram, Allahabad -
211006
Tel: 0532-2506930, 2507176
Miandal: 9415340862



Swamiji, You came to my ashram, along with the National President of the World Hindu Council of that time, Mr. Ashok Singhal ji. I had your honoured presence, after which you left. After 3-4 days of that visit, Hon'ble Ashok Singhal ji visited me. He told the whole thing about Swamiji. Earlier, sometimes I used to listen through TV, and listen through the media. But when Singhal Sir told me the whole thing - since then, I fully adopted Swamiji. When Singhal Sahib said that Swamiji's character is this and Swamiji is promoting Hindus and Sanatana Dharma (Hinduism) all over the world, and since then I have started respecting Swamiji as my ideal. The manner in which His Divine Holiness was misprojected was wrong. And even today I say that I felt wonderful to visit the ashram (monastery) of His Divine Holiness, it feels that there is surely some divine power here.

All of you are fortunate. All those of you who are related to Swamiji, are all very fortunate. Today I also consider myself to be fortunate because I am associated with Swamiji. One more thing I will say the last thing, whoever will associate with Swamiji will naturally become fortunate. Regarding such a great ascetic saint, I believe that on the strength of penance and on the strength of meditation, human beings become in the form of God. Today in front of you seeing the honorable Nityananda Swamiji's spiritual practices, penance, strength, I felt that really in fact I have come here in the ashram of a divine man.

All of you who are present here and who are watching Swamiji's program through Sadhana channel, all of you from my side, and from Lord Hanuman ji, a lot of blessings, many good wishes.

Once more I offer my salutation to Swamiji again.

S/n
Mahant Narendra Giri
The President
Akhil Bharatiya Akhada Parishad